وہ سرزمین
جس کے ذرے ...

جب سے انسان کی تاریخ مرتب ہوئی ہے اسی دن سے ہر ایک ملک نے اپنے اپنے جانباز محب الوطنوں اور بہادروں کی عظمت کے گیت گائے ہیں۔ ان بہادر محب الوطنوں کی یاد ہر دور کی نوجوان نسل کا حوصلہ بڑھاتی ہے۔ ان کے دلوں میں بے لوث خدمت اور قربانی کا جذبہ پیدا کرتی ہے

حال ہی میں حکومت ہند نے سر زمین ہند کے ایک ایسے لافانی محب الوطن اور بہادر سپاہی مہارانا پرتاپ کی یادگار کے طور پر ایک خاص ڈاک ٹکٹ جاری کیا تھا۔ مہارانا پرتاپ ان گنتی کے چند اور شجاع اور عظیم محب الوطنوں میں ایک ہیں۔ جن کی ساری داستان حیات اس اصول سے عبارت ہے کہ آزادی کی جنگ میں کسی بھی سمجھوتے کا سوال پیدا نہیں ہوتا۔

مہارانا پرتاپ کی بے مثال شجاعت بہادری اور جانبازی سے کون ہندوستانی واقف نہیں ہے اور یہ آج سے صرف چار سو سال پہلے کی بات ہے کہ مہارانا پرتاپ نے بے پناہ قوت کے مالک شہنشاہ ہندوستان اکبر سے لوہا لیا تھا اور مہارانا کے انتہائی محدود ذرائع اور سپاہیوں کے باوجود مہارانا پرتاپ پر شہنشاہ اکبر کو فتح کا دن دیکھنا نصیب نہ ہوا تھا۔

راجستھان کی سرزمین کا ذرہ ذرہ مہارانا پرتاپ کی داستان شجاعت سناتا ہے اور پھر یہ بھی ایک تاریخی حقیقت ہے کہ راجستھان نے کئی ایسے قومی ہیرو دیش [illegible] دیش کو دیئے اور قدرتی امر ہے کہ راجستھان کو اپنے ان قومی ہیروں پر فخر ہے۔ آیئے آج ہم آپ کو دیش کے مایہ ناز جنگجوؤں کی سر زمین میواڑ کی اس مختصر سی جھلک سے ہمارے دلوں میں آزادی وطن کے عظیم سپاہی مہارانا پرتاپ کی یاد پھر تازہ ہو اٹھے گی

اودے پور میواڑ کی راجدھانی تھی اور یہی وہ تاریخی شہر ہے۔ جہاں راجپوت قوم کے سرتاج اور انمول رتن مہارانا پرتاپ کے پتا مہاراجہ اودے پور اپنے منظر بہ اور لکھو ببری حسن کے لئے دنیا بھر میں مشہور ہے اور ایک فرانسیسی سیاح پیئر لوٹی نے اس کو لذیذ اور پر لطف بنا دینے قرار دیا تھا اور کئی ہندوستانی سیاحوں

... ہندی بولئے

...گا ہے (گاندھی جی)

...ی ہے اور قومی ایکتا کیلئے ہندی
...پ نے اپنا حصہ ڈالا ہے؟ اگر نہیں تو

...ی رجسٹرڈ سرینگر

...نے کے مفید تعلیمی مشوروں کے ساتھ ساتھ
...ہی سمیتی کی وساطت سے لئے جا رہے
...سے منظور شدہ ہیں کیلئے اپنے
...یشن اپریل سنہ ۱۹۷۱ء میں ہوگا جو جموں کشمیر
...لے گئے ہیں آپ اپنے نزدیک کے سنٹر
...امتحانات یا کسی اور غرض کیلئے کوئی فیس
...والے امیدواروں کو انعامات بھی سمیتی کی طرف سے
...اور وساطت سے ۲۲۱۲۶
...ہے جنہیں ۶۲۳۶ (چھ ہزار دو سو چھتیس)

سیکرٹری

...(رجسٹرڈ) امیرا کدل سرینگر (ٹیلیفون نمبر ۳۱۷۲)

तिसज्ञानविषे उत्कृष्टफलवत्त्व कथनकऱ्या ॥ यातैं तिनदोनोंपदोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ ऐसेउत्कृष्टवस्तुकूंविषयकरणेहारे तथाउत्कृष्टफलकीप्राप्ति करणेहारे आत्मज्ञानकेसाधनरूपज्ञानकूं मैंश्रीभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति पुनःभी कथनकरताहूं ॥ अर्थात् इसतैंपूर्वअध्यायोंविषे जोज्ञान अनेकवार हमनैं तुमारे प्रति कथनकऱ्याहे ॥ सोईहींज्ञान अबी पुनःभी पूर्वउक्तप्रकारतैं किंचित्‌विलक्षणप्रकारकरिकै मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ जिससाधनरूपज्ञानकूं श्रद्धाभक्ति पूर्वक अनुष्ठानकरिकै सर्वहीं मननशीलसंन्यासी कैवल्यमोक्षरूपपरमसिद्धिकूं इसदेहसंबंधतैंप्राप्तहोतेभयेहैं इति ॥ १ ॥ ❁ ॥ तहां तिससाधनरूपज्ञानकेप्राप्तहुए इसपुरुषकूं सामोक्षरूपपरमसिद्धिअवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू॰ श्लो॰) इदंज्ञानमुपाश्रित्यममसाधर्म्यमागताः । सर्गेपिनोपजायंतेप्रलयेनव्यथंतिच ॥ २ ॥ इदं । ज्ञानम् । उपाश्रित्य । मम । साधर्म्यम् । आगताः । सर्गे । अपि । न । उपजायंते । प्रलये । न । व्यथंति । च ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस साधनरूपज्ञानकूं अनुष्ठान करिकै मैंपरमेश्वरके अद्वितीयनिर्गुणस्वरूपकूं अत्यंतअभेदकरिकैप्राप्तहुए विद्वान्‌पुरुष सृष्टिकालविषे भी नहीं उत्पन्नहोवैहैं तथा प्रलयकालविषे नहीं लयहोवैहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इस साधनरूपज्ञानकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अनुष्ठानकरिकै मैंपरमेश्वरके अद्वितीयनिर्गुणरूपकूं अत्यंतअभेदरूपकरिकै प्राप्तहुए अर्थात् हमहीं अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूपहैं याप्रकारतैं आपणेआत्माकूं अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूपजानतेहुए विद्वान्‌पुरुषसर्गविषेभी नहींउत्पन्नहोवैहैं तथाप्रलयविषेभी नहींलयहोवैहैं ॥ अर्थात् हिरण्यगर्भादिकोंकेउत्पन्नहुएभी तेतत्त्ववेत्तापुरुष उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ तथा ताहिरण्यगर्भकेविनाशकालरूपप्रलयविषेभी तेतत्त्ववेत्तापुरुष लयभावकूंप्राप्तहो वैंनहीं इति ॥ २ ॥ ❁ ॥ इसप्रकार दोश्लोकोंकरिकै तिसज्ञानकीप्रशंसाकरिकैश्रोतापुरुषोंकूं श्रीभगवान् तिसज्ञानकेअभिमुखकरताभया ॥ अब परमेश्वरकेआधीनवर्तनेहारे जेप्रकृतिपुरुषहै ॥ तिसप्रकृतिपुरुषदोनोंकूंहीं सर्वभूतोंकेउत्पत्तिकाकारणपणाहै ॥ सांख्यशास्त्रकीन्यांई स्वतंत्र तिसप्रकृतिपुरुषदोनों विषे सर्वभूतोंकाकारणपणाहैनहीं ॥ इसविवक्षितअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरैहै ॥

(मू॰ श्लो॰) ममयोनिर्महद्ब्रह्मतस्मिन्गर्भंदधाम्यहम् ॥ संभवः सर्वभूतानांततोभवति भारत ॥ ३ ॥ मम । योनिः । महद्ब्रह्म । तस्मिन् । गर्भम् । दधामि । अहम् । संभवः । सर्वभूतानाम् । ततः । भवति । भारत ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत त्रिगु

णात्मकमाया मैंईश्वरके गर्भाधानकास्थानहैं तिसमायाविषे मैंईश्वर संकल्परूपगर्भकूं धारणकरूंहूं तिसंगर्भाधानतैंहीं सर्वभूतोंकी उत्पत्ति होवैहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरका महद्ब्रह्म योनिहै ॥ ईहां महद्ब्रह्मशब्दकरिकै अव्याकृतका ग्रहणकरणा ॥ जिसअव्याकृतकूं शास्त्रविषे अविद्या अज्ञान प्रकृति त्रिगुणात्मिकामाया इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोअव्याकृत आपणेआकाशादिकसर्वकार्योंकीअपेक्षाकरिकैअधिकहोणेतैं महत् कह्याजावैहै ॥ तथा आपणेसर्वकार्योंकेवृद्धिकाहेतुहोणेतैं ब्रह्म कह्याजावैहै ॥ अथवा ब्रह्मका उपाधिरूपहोणेतैं सोअव्याकृत ब्रह्मकह्याजावैहै ॥ अथवा महत्तत्वनामा प्रथम कार्यकेवृद्धिकाहेतुहोणेतैं सोअव्याकृत महद्ब्रह्म कह्याजावैहै ॥ ऐसेमहद्ब्रह्मनामवाली त्रिगुणात्मकमाया मैंपरमेश्वरकी योनिहै ॥ अर्थात् गर्भाधानकरणेका स्थानरूपहै ॥ ऐसीमायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वर गर्भकूंधारणकरूंहूं ॥ अर्थात् सर्वभूतोंकेजन्मकाकारणरूप जो (एकोऽहंबहुस्यांप्रजायेय) इसप्रकारका ईक्षण रूपसंकल्पहै ॥ तिससंकल्परूपगर्भकूं तिसमायारूपयोनिविषे धारणकरूंहूं अर्थात् तिससंकल्पकाविषयकरूंहूं ॥ जैसे इसलोकविषे कोईकपिता पुण्यपापकरिकै युक्तहुए तथाव्रीहियवादिकआहाररूपकरिकैआपणेविषेलीनहुये ऐसेपुत्रकूं स्थूलशरीरकेसाथिसंबंधकरणेवासतै आपणीस्त्रीकीयोनिविषे वीर्यकेसिंचनपूर्वक गर्भकूंधारणकरेहै ॥ तिसगर्भाधानतैं सोपुत्र स्थूलशरीरकेसाथि संबंधवालाहोवैहै ॥ तिसशरीरकेसंबंधवासतै मध्यविषे कलिल बुदबुद आदिकअनेकअवस्था होवैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे मैंपरमेश्वरविषेलीनहुए जे अविद्या काम कर्मवाले क्षेत्रज्ञनामाजीवहैं ॥ तिनजीवोंकूं सृष्टिकालविषे कार्यकारणसंघातरूप भोग्य क्षेत्रकेसाथि संबंधकरणेवासतैहीं मैंपरमेश्वर चिदाभासरूपवीर्यकेसिंचनपूर्वक तिस मायाकीवृत्तिरूपगर्भकूं धारणकरूंहूं ॥ तिसशरीरकेसंबंधवासतैही मध्यविषे आकाश वायु तेज जल पृथिवी इत्यादिकोंकीउत्पत्तिरूपअवस्था होवैहैं ॥ तिसमायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैंही हिरण्यगर्भादिकसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैंविना तिनसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् मायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैं सर्व भूतोंकीउत्पत्ति कैसेसंभवैगी ॥ जिसकारणतैं देवतादिकदेहविशेषोंके दूसरेकारणभी संभवहोइसकेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वयोनिषुकौंतेयमूर्त्तयःसंभवंतियाः ॥ तासांब्रह्ममहद्योनिरहंबीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥ सर्वयोनिषु । कौंतेय । मूर्त्तयः । संभवंति । याः । तासाम् । ब्रह्ममहत् । योनिः । अहम् । बीजप्रदः । पिता ॥४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय देवादिक सर्वयोनियों विषे जे शरीर उत्पन्नहोवैहैं तिनशरीरोंका सोमायाही मातारूपहै मैंपरमेश्वरतौं गर्भाधानकाकर्त्ता पितारूपहूं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देव पितर मनुष्य पशु मृग इत्यादिकसर्वयोनियोंविषे जेजेमूर्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ अर्थात् जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज इसभेदकरिकै विलक्षण तथानानाप्रकारकेआकारवाले जेजेशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनशरीररूपसर्वमूर्तियोंका तिसतिसमूर्तिकेकारणभावकूंप्राप्तहुई साअव्याकृतनामामायाहीं मातारूपहै ॥ और मैंपरमेश्वरतैं तिसमायारूपयोनिविषे गर्भाधानकरणेहारा तिनसर्व शरीरोंका पितारूपहूं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ तिनदेवादिकशरीरोंके लोकप्रसिद्ध जेजेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ तेसर्वकारण तिसअव्याकृतनामा मायारूपब्रह्मकेहीं अवस्थाविशेषरूपहै ॥ यातैं (संभवःसर्वभूतानांततोभवतिभारत) यह भगवान्कावचन युक्तहींहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व ईश्वरकूंनहींअंगीकारकरणेहारे निरीश्वरवादीसांख्यशास्त्रकाखंडनकरिकै क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगकूं ईश्वरके अधीनपणा कथनकरचा ॥ अब किसगुणविषे किसप्रकारकरिकै संगहोवैहै ॥ तथा तेगुणकौंनहैं ॥ तथा तेगुण किसप्रकारकरिकै इसपुरुषकूं बंधायमानकरेहैं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् (सत्त्वंरजस्तमः) इसश्लोकतैं आदिलैके (नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारम्) इसश्लोकतैंपूर्व चतुर्दशश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै

(मू०श्लो०) सत्वंरजस्तमइतिगुणाःप्रकृतिसंभवाः ॥ निबध्नंतिमहाबाहोदेहेदेहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥ सत्वं । रजः । तमः । इति । गुणाः । प्रकृतिसंभवाः । निबध्नंति । महाबाहो । देहे । देहिनम् । अव्ययम् ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन सत्त्व रज तम यह मायातैंउत्पन्नहुए तीनगुणं ईसदेहविषे अव्यय जीवात्माकूं बंधायमानकरैहैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्त्व रज तम इसनामवाले जेतीनगुणहैं तेसत्त्वादिकतीनोंगुण चैतन्यपुरुषकेप्रति नित्यहीं परतंत्रहैं ॥ कदाचित्भी तेगुण स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ काहेतैं इसश्लोकविषे जेजेपदार्थ अचेतनरूपहैं ॥ तेसर्वअचेतनपदार्थ चैतन्यपुरुषकेअर्थहींहोवैहैं ॥ जैसे गृहादिकअचेतनपदार्थ चेतनगृहीपुरुषकेअर्थहीं होवैहैं ॥ तैसे तेसत्वादिकतीनगुणभी अचेतनहोणेतैं चेतनपुरुषकेअर्थहींहैं ॥ जैसे नैयायिक रूपादिकगुणोंकूं पृथिवीआदिकद्रव्यकेआश्रितमानेहैं ॥ तैसे यहसत्त्वादिकतीनगुण किसीद्रव्यकेआश्रितहैंनहीं ॥ तथा जैसे नैयायिक पृथिवीआदिकगुणीद्रव्यतैं रूपादिकगुणोंकूं भिन्नमानेहैं ॥ तैसे ईहांसिद्धांतविषे तिनसत्त्वादिकगुणोंका मायारूपप्रकृतितैं भिन्नपणा विवक्षितहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सिद्धांतविषे सामायारूपप्रकृति सत्त्वादिकतीनगुणरूपहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेसत्त्वादिकतीनगुण जोकदाचित् प्रकृतिरूपहींहोवैं ॥ तौ (प्रकृतिसंभवाः) इसवचनकरिकैतिनगुणोंकी प्रकृतितैंउत्पत्तिकिसवास्तैकथनकरीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (प्रकृतिसंभवाः) हेअर्जुन सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकी जा साम्यअवस्थाहै ताकानाम प्रकृतिहै ॥ जिसप्रकृतिकूंशास्त्रविषे भगवत्कीमाया कहेहैं ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतितैं तेसत्वादिकतीनगुणपरस्पर अंगअंगीभावकरिकै विषमताकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेसत्वादिकगुण

(प्रकृतिसंभवा) इसनामकरिकैकहेजावैहैं ॥ तेसत्वादिकतीनगुण इसदेहविषे अर्थात् तिसप्रकृतिकेकार्यरूपशरीरइंद्रियसंघातविषे अव्ययरूपदेहीकूं अर्थात् वास्तवतैं जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहोणेतैं अव्ययरूप तथाअविद्याकरिकै देहकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएजीवकूं बंधायमानकरेहैं ॥ अर्थात् वास्तवतैं निर्विकाररूपभी तिसजीवात्माकूं तेसत्वादिकगुण आपणेविकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्यांई दिखावैहैं ॥ यहहीं तिनसत्वादिकगुणोंकृत तिसजीवात्माविषेबंधहै ॥ याप्रकारका (निबध्नंति) इसशब्दकाअर्थ अगलेश्लोकोंविषेभीजानलेणा ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे जलकरिकै भरयेहुएपात्र आकाशविषेस्थितसूर्यकूं प्रतिबिंबाध्यासकरिकै आपणेविषेस्थितकंपादिक विकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्यांई दिखावैहैं ॥ तैसे तेसत्वादिकतीनगुणभी वास्तवतैंनिर्विकारआत्माकूंभी आपणेविषे स्थित विकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्यांई दिखावैहैं ॥ आत्माविषे जैसे वास्तवतैं बंधनहींसंभवैहैं ॥ तैसे (शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते) इसवचनविषे पूर्वविस्तारतैं कथनकरिआयेहैं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सत्व रज तम इनतीनगुणोंविषे इसजीवात्माका बंधकपणा कथनकऱ्या ॥ अब कौंनगुण किसके संगकरिकै इसजीवात्माकूंबंधायमानकरेहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तत्रसत्त्वंनिर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ॥ सुखसंगेनबध्नातिज्ञानसंगेनचानघ ॥ ६ ॥ तत्र । सत्त्वम् । निर्मलत्वात् । प्रकाशकम् । अनामयम् । सुखसंगेन । बध्नांति । ज्ञानसंगेन । च । अनघ ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वव्यसनोंतैंरहितअर्जुन तिनतीनगुणोंकेमध्यविषे स्वच्छहोणेतैं प्रकाशक तथादुःखतैंरहित ऐसा सत्वगुण इसजीवात्माकूं सुखसंगकरिकै तथा ज्ञानसंग करिकै बंधायमानकरेहै ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्व रज तम यहपूर्वकथनकऱ्येजे तीनगुणहैं ॥ तिनतीनगुणोंकेमध्यविषे प्रथम जोसत्त्वगुणहै ॥ सोसत्त्वगुणकैसाहै प्रकाशकहै ॥ अर्थात् चैतन्यका तमोगुणकृतजोआवरणहै ताआवरणका नाशकरणेहाराहै ॥ ताप्रकाशकताविषेहेतुकहेहै ॥ (निर्मलत्वात् इति) अर्थात् आपणेस्वच्छस्वभावताकरिकै चेतनकेप्रतिबिंबकेग्रहणकरणे योग्यहोणेतैं सोसत्त्वगुण प्रकाशकहै ॥ किंवा सोसत्त्वगुण केवल चैतन्यकाहींअभिव्यंजकनहींहै ॥ किंतु अनामयभीहै ॥ अर्थात् दुःखरूपआमयकाविरोधीजोसुखहै तिससुखकाभी सोसत्त्वगुण अभिव्यंजकहै ॥ इसप्रकार चैतन्यका तथा सुखका अभिव्यंजक जोसत्त्वगुणहै ॥ सोसत्त्वगुण इस जीवात्माकूं सुखसंगकरिकै तथाज्ञानसंगकरिकै बंधायमानकरेहै ॥ ईहां सुखशब्दकरिकै तथाज्ञानशब्दकरिकै अंतःकरणकापरिणामरूप सुखका तथाज्ञानका ग्रहणकरणा ॥ कोई आत्मस्वरूप सुखका तथाज्ञानका तासुखज्ञानशब्दकरिकैग्रहणकरणानहीं ॥ काहेतैं (इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः) इसपूर्वउक्त

श्लोकविषे सुखकूं तथाचेतनारूपज्ञानकूंभी इच्छाद्वेषादिकोंकीन्यांई क्षेत्रकाहीं धर्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां अंतःकरणकाधर्मरूप जोसुखहै तथाज्ञानहै ॥ तासुखज्ञानदोनोंका जोआत्माविषेअध्यासहै जोअध्यास मैंसुखीहूं मैंजानताहूं इसप्रकारकीप्रतीतिकरिकैसिद्धहै ॥ ताकानाम सुखसंगहै तथाज्ञानसंगहै ॥ ऐसे सुखसंगकरिकै तथाज्ञानसंगकरिकै सोसत्त्वगुण इसजीवात्माकूं बंधायमानकरेहै ॥ तहां विषयकेधर्म प्रकाशकरूपविषयीकेहोवैंनहीं ॥ जैसे घटादिकविषयोंकेधर्म प्रकाशकसूर्यकेहोवैंनहीं ॥ यातैं यहसर्वबंध अविद्यामात्रहीहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआयेहैं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) रजोरागात्मकंविद्धितृष्णासंगसमुद्भवम् ॥ तन्निबध्नातिकौंतेयकर्मसंगेनदेहिनम् ॥ ७ ॥ रजः । रागात्मकम् । विद्धि । तृष्णासंगसमुद्भवम् । तत् । निबध्नाति । कौंतेय । कर्मसंगेन । देहिनम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय तृष्णासंगदोनोंकी उत्पत्तिहैजिसतैं ऐसेरजोगुणकूं तूं रागरूप जान सोरजोगुण इसदेहाभिमानीजीवकूं कर्मसंगकरिकै बंधायमानकरेहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां यहपुरुष शब्दादिकविषयोंविषे रंजनकूंप्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम रागहै ॥ सोरागहीहै आत्मा क्या स्वरूप जिसका ताकानाम रागा त्मकहै ॥ ऐसा रागात्मक रजोगुणकूं तूं जान ॥ यद्यपि सोराग तिसरजोगुणका धर्महै ॥ तथापि धर्म धर्मी दोनोंका तादात्म्यहीहोवैहै ॥ यातैं तारजोगुणकूं रागरूपकह्याहै ॥ इसीकारणतैंहीं सोरजोगुण तृष्णासंगसमुद्भवहै ॥ तहां अप्राप्तवस्तुकेप्राप्तिकीजाअभिलाषाहै ॥ ताकानाम तृष्णाहै ॥ और प्राप्तवस्तुके विनाश केप्राप्तहुएभी जो तिसवस्तुकेरक्षणकरणेकीअभिलाषाहै ताकानाम आसंगहै ॥ तिस तृष्णा आसंग दोनोंकी उत्पत्तिहैजिसतैं ताकानाम तृष्णासंगसमुद्भवहै ॥ ऐसा रजोगुण वास्तवतैं अकर्त्तारूपहुएभी कर्तृत्वअभिमानवालेजीवात्माकूं कर्मसंगकरिकै बंधायमानकरेहै ॥ तहां इसलोकके फलकाहेतुरूप तथापरलोकके फलकाहे तुरूप जे लौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंविषे मैंइसकर्मकूंकरूंहूं मैं इसकर्मकूंभोगौंगा इसप्रकारका जो अभिनिवेशविशेषहै ताकानाम कर्मसंगहै ॥ ऐसे कर्मसंग करिकै सोरजोगुण इसजीवात्माकूं बंधायमानकरेहै ॥ जिसकारणतैं सोरजोगुण केवल प्रवृत्तिकाहीहेतुहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) तमस्त्वज्ञानजंविद्धिमोहनंसर्वदेहिनाम् ॥ प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नातिभारत ॥ ८ ॥ तमः । तु । अज्ञानजम् । विद्धि । मोहनम् । सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिः । तत् । निबध्नाति । भारत ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत पुनः तमोगुणकूं तूं अज्ञानजन्य जान जोतमोगुण सर्वजीवोंकूं भ्रांतिकाजनकहैसोतमोगुण प्रमादआलस्यनिद्राकरिकै इसजीवकूं बंधायमान करेहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (तमस्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त सत्त्व रज दोनोंकीअपेक्षाकरिकै इसतमोगुणविषे विलक्षणताकेबोधन करणेवासतैंहै ॥ हेअर्जुन तमोगुणकूं तूं आवरणशक्तिरूपअज्ञानतैं उत्पन्नहुआ जान ॥ इसकारणतैंहीं सोतमोगुण सर्वदेहाभिमानीजीवोंका मोहनहै ॥ अर्थात् अविवेकरूपताकरिकै भ्रांतिकाजनकहै ॥ ऐसातमोगुण इसदेहाभिमानीजीवकूं प्रमादकरिकै तथाआलस्यकरिकै तथानिद्राकरिकै बंधायमानकरैहै ॥ तहां वस्तुके विवेककरणेकाजोअसामर्थ्यहै ताकानाम प्रमादहै ॥ सोप्रमादतौं सत्त्वगुणके प्रकाशरूपकार्यका विरोधीहोवैहै ॥ और प्रवृत्तिकरणेका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम आलस्यहै॥ सोआलस्यतौं रजोगुणके प्रवृत्तिरूपकार्यका विरोधीहोवैहै ॥ और तमोगुणकूंआलंबनकरणेहारीजा लयरूपवृत्तिविशेषहै ताकानाम निद्राहै ॥ सानिद्रा तौं सत्वगुणकेकार्यका तथारजोगुणकेकार्यकादोनोंकाहीं विरोधीहोवै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन्पूर्वउक्तकार्योंकेमध्यविषे किसकार्यविषे किसगुणकी उत्कर्षताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं ॥

(मू० श्लो०) सत्त्वंसुखेसंजयतिरजःकर्मणिभारत ॥ ज्ञानमावृत्यतुतमःप्रमादेसंजयत्युत ॥ ९ ॥ सत्वं । सुखे । संजयति । रजः । कर्मणि । भारत । ज्ञानम् । आवृत्य । तु । तमः । प्रमादे । संजयति । उत ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत सत्वगुण इसपुरुषकूं सुखविषे युक्तकरैहै तथारजोगुण कर्मविषे युक्तकरैऔर तमोगुणतौं ज्ञानकूं आच्छादनकरिकै प्रमादविषे भी युक्तकरैहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोपूर्वउक्त सत्वगुण उत्कर्षताकूंप्राप्तहुआ इसदेहाभिमानीजीवकूं सुखविषे युक्तकरैहै ॥ अर्थात् दुःखकेकारणका अभिभवकरिकै इसपुरुष कूं सुखविषेजोडैहै ॥ इसप्रकार सोरजोगुणभी उत्कर्षताकूंप्राप्तहुआ सुखकेकारणोंका अभिभवकरिकै इसजीवात्माकूं लौकिकवैदिककर्मोंविषे युक्तकरैहै ॥ और तमोगुणतौं प्रयाणकेबलकरिकैउत्पन्नहुएभी सत्त्वगुणकेकार्यरूपज्ञानकूं आवृतकरिकै इसपुरुषकूं प्रमादविषे युक्तकरैहैं ॥ तहांजिसवस्तुकाजानणा अवश्यकरिकै प्राप्तहोवै तावस्तुकाभी जोनहींजानणाहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ऐसेप्रमादविषे सोतमोगुण इसपुरुषकूं जोडैहै ॥ ईहां (संजयत्युत) इसवचनविषेस्थितजो उत यह शब्दहै ॥ सोउतशब्द अपिइसशब्दकेअर्थकावाचकहै ॥ ताकरिकै आलस्य निद्राइनदोनोकाभीग्रहणकरणा ॥ अर्थात् सोतमोगुण इसजीवात्माकूं आलस्यविषे तथानिद्राविषेभी जोडैहैं ॥ तहां जोकार्य अवश्यकरिकैकरणेयोग्यहै ताकार्यकाभी जोनहींकरणाहै ताकानाम आलस्यहै ॥ और लयनामा तामसीवृत्तिविशेषकानाम निद्राहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसपूर्वश्लोक विषेकथनकऱ्याजो सत्त्वादिकतीनगुणोंका कार्यहै ॥ तिसआपणेआपणेकार्यकूं तेसत्वादिकतीन गुण किसकालविषे करैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहे हैं ॥

(मू० श्लो०) रजस्तमश्चाभिभूयसत्त्वंभवतिभारत ॥ रजःसत्वंतमश्चैवतमःसत्त्वंरजस्तथा ॥ १० ॥ रजः । तमः । च । अभिभूय । सत्वं । भवति । भारत । रजः । सत्वं । तमः । च । एव । तमः । सत्वं । रजः । तथा ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत रजोगुणकूं तथा तमोगुणकूं अभिभवकरिकै जबीसत्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवै तथा रजोगुणकूं तथा सत्वगुणकूं अभिभवकरिकै जवी तमोगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै तथा तमोगुणकूं तथासत्वगुणकूंअभिभवकरिकै जवी रजोगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तवी तेसत्त्वादिकगुण आपणेआपणेकार्यकूंकरैहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे रज तम इनदोनोंहींगुणोंकूं एकहींकालविषेअभिभवकरिकै अर्थात् तिरस्कारकरिकै सोसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे सो सत्त्वगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार सोरजोगुणभीजिसकालविषे सत्त्वगुणकूं तथातमोगुणकूं दोनोंकूं एकहींकालविषे अभिभवकरिकै वृद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषेहीं सोरजोगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार तमोगुणभी जिसकालविषे सत्त्वगुणकूं तथारजोगुणकूंदोनोंकूं एकहींकालविषेअभिभवकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषेहीं सोतमोगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरैहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनसत्वादिकतीनगुणोंकीवृद्धि किसलिंगकरिकैजानीजावैहै ॥ तावृद्धिकेज्ञानहुएहीं यहपुरुष ताकेनिवृत्तकरणेविषेसमर्थहोवैंगा ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् वृद्धिकूंप्राप्तहुए तिनसत्वादिकतीन गुणोंके लिंगोंकूं तीनश्लोकोंकरिकैकथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वद्वारेषुदेहेस्मिन्प्रकाशउपजायते ॥ ज्ञानंयदातदाविद्याद्विवृद्धंसत्वमित्युत ॥ ११ ॥ सर्वद्वारेषु । देहे । अस्मिन् । प्रकाशः । उपजायते । ज्ञानम् । यदा । तदा । विद्यात् । विवृद्धम् । सत्वम् । इति । उत ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस देहविषे श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंविषे जिसकालमैं ज्ञानरूप प्रकाश उत्पन्नहोवैहै तिसकालविषे सत्वगुण वृद्धिकूं प्राप्तहूआहै इसप्रकार जानणा ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसजीवात्माका सुखदुःखकेभोगकास्थानरूपजो यहदेहहैं ॥ इसदेहविषेस्थित जे शब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकासाधनरूप श्रोत्रादिकइंद्रियरूप सर्वद्वारहैं ॥ तिनइंद्रियरूपसर्वद्वारोंविषे जिसकालमैं ज्ञानरूपप्रकाश उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे दीपक आपणेविषयरूपघटादिकपदार्थोंकेअंधकारकू

पआवरणका विरोधीहोवैहै ॥ तैसे आपणेशब्दादिकविषयोंकेआवरणकाविरोधी ऐसाजो तिनशब्दादिकविषयाकार बुद्धिकावृत्तिरूपपरिणामविशेषहै ताका नाम प्रकाशहै ॥ ऐसाज्ञानरूपप्रकाश जिसकालविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिसज्ञानप्रकाशरूपलिंगकरिकै यहपुरुष अबी प्रकाशरूपसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै इसप्रकार जानैं ॥ ईहां (विवृद्धंसत्त्वमित्युत) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो उत यहशब्दहै ॥ सोउतशब्द अपि इसशब्दकेअर्थका वाचकहै ॥ ताकरिकैयहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जैसे ज्ञानरूपप्रकाशकरिकै सत्त्वगुणकीवृद्धि जानीजावैहै ॥ तैसेसुखादिकलिंगोंकरिकैभी यहपुरुषतासत्वगणकीवृद्धिकूं जानैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं उत इसशब्दकायहअर्थकऱ्याहै ॥ सत्त्वगुणकीवृद्धिकीन्यांई यहपुरुष तिसज्ञानरूपप्रकाशकरिकै रज तम इनदोनोंगुणोंके क्षीणताकूंभी जानैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) लोभःप्रवृत्तिरारंभःकर्मणामशमःस्पृहा ॥ रजस्येतानिजायंतेविवृद्धेभरतर्षभ ॥ १२ ॥ लोभः । प्रवृत्तिः । आरंभः । कर्मणाम् । अशमः । स्पृहा । रजसि । एतानि । जायंते । विवृद्धे । भरतर्षभ ॥१२॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेभरतर्षभ रजोगुणके वर्द्धमानहूए लोभ प्रवृत्ति कर्मोंका आरंभ अशम स्पृहा यहसर्व उत्पन्नहोवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन रागात्मक रजोगुणकेवर्द्धमानहुए इसपुरुषविषे लोभप्रवृत्ति कर्मोंकाआरंभ अशम स्पृहा इतनैंरागात्मकलिंग उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थात् इनलोभादिकलिंगोंकरिकै यहपुरुष रजोगुणकेवृद्धिकूंजानैं ॥ तहां महान्‌धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिहुएभी दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहुईजा तिनधनादिकप्राप्तिकीअभिलाषाहै ताकानामलोभहै ॥ अर्थात् आपणेविषयकीप्राप्तिकरिकैभी नहीं निवृत्तहुई जाइच्छाविशेषहै ताकानाम लोभहै ॥ और निरंतरहीं प्रयत्नवाला होणा याकानाम प्रवृत्तिहै ॥ और बहुतधनकेखरचकरणेतैंसिद्धहोणेहारे तथा शरीरकूंआयासकीप्राप्तिकरणेहारे ऐसेजेकाम्य निषिद्ध लौकिक महागृहादिविषयक व्यापारहैं तिनोंकानाम कर्महै ॥ ऐसेकर्मोंकाजो उद्यमहै ताकानाम कर्मोंका आरंभहै ॥ और इसकार्यकूंकरिकै पुनःमैं इसदूसरेकार्यकूंकरौंगा इसदूसरेकार्यकूं करिकै पुनःमैं इसतीसरेकार्यकूंकरौंगा याप्रकारकेसंकल्पोंकेप्रवाहकीजो नहींउपरामताहोणीहै ताकानाम अशमहै ॥ और परधनादिकोंकेदेखणेमात्रकरिकै जो जिसीकिसीउपायकरिकै तिनपरधनादिकोंकेग्रहणकरणेकीइच्छाहै ताकानाम स्पृहाहै ॥ इसप्रकार लोभतैंआदिलैकेस्पृहापर्यंत कथनकऱ्येजेलिंगहैं ॥ तिनलिंगों करिकै यहपुरुष वृद्धिकूंप्राप्तहुएरजोगुणकूंजानैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्चप्रमादोमोहएवच ॥ तमस्येतानिजायंतेविवृद्धेकुरुनंदन ॥ १३ ॥ अप्रकाशः । अप्रवृत्तिः । च ।

प्रमादः । मोहः । एव । च । तमसि । एतानि । जायंते । विवृद्धे । कुरुनंदन ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तमोगुणके वर्द्ध
मानहुए हीं अप्रकाश तथा अप्रवृत्ति तथाप्रमाद तथा मोह इतनेंलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे तमोगुणकीवृद्धिहोवैहै ॥ तिसकालविषे अप्रकाश अप्रवृत्ति प्रमाद मोह इतनेंलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ अर्थात् यहपुरुष इतनें अव्यभिचारीलिंगोंकरिकैहीं तमोगुणकेवृद्धिकूंजानैं ॥ तहां गुरुशास्त्रादिक बोधकेकारणोंकेविद्यमानहुएभी जो सर्वप्रकारतैं ताबोधकीअयोग्यताहै ताकानाम अप्रकाशहै ॥ और उत्पन्नकऱ्याहै आपणेअर्थकाबोधनजिसनैं ऐसाजो प्रवृत्तिकाकारणरूप (अग्निहोत्रंजुहुयात्) इत्यादिकशास्त्रहै ताशास्त्रकेविद्यमानहुएभी जो सर्वप्रकारतैं तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे प्रवृत्तिकीअयोग्यताहै ताकानाम अप्रवृत्तिहै ॥ और तिसकालविषे कर्तव्यतारूपकरिकैप्राप्तहुए अर्थकाभीजो तिसकालविषेस्मरणनहींहोणा ताकानाम प्रमादहै ॥ और निद्राका तथाविपर्ययका नाम मोहहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अब मरणकालविषेवृद्धिकूंप्राप्तहुए तिनसत्त्वादिकतीन गुणोंकेफलविशेषकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) यदासत्त्वेप्रवृद्धेतुप्रलयंयातिदेहभृत् ॥ तदोत्तमविदांलोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ यदा । सत्त्वे । प्रवृद्धे । तु । प्रलयम् । याति । देहभृत् । तदा । उत्तमविदाम् । लोकान् । अमलान् । प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः यहदेहाभिमानीजीव जबी सत्त्वगुणके वर्द्धमानहुए मृत्युकूं प्राप्तहोवैहै तबी उपासक पुरुषोंके मलरहित लोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहदेहाभिमानीजीव जबी सत्त्वगुणकेवृद्धिहुए मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीव उत्तमवित् पुरुषोंकेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां हिरण्यगर्भादिकदेवतावोंकानाम उत्तमहै ॥ तिनउत्तमोंकूं जेपुरुष जानैहैं अर्थात् तिनहिरण्यगर्भादिकदेवतावोंकी जेपुरुष उपासनाकरैहैं तिनपुरुषोंकानाम उत्तमवित्है ॥ तिनउत्तमवित्पुरुषोंके जेलोकहैं ॥ अर्थात् दिव्यसुखोंकेभोगके जेस्थानविशेषहैं ॥ जेलोक अमलहैं ॥ अर्थात् रजतमरूपमलतैंरहितहैं ॥ ऐसेलोकोंकूं सो पुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ १४ ॥

(मू० श्लो०) रजसिप्रलयंगत्वाकर्मसंगिषुजायते ॥ तथाप्रलीनस्तमसिमूढयोनिषुजायते ॥ १५ ॥ रजसि । प्रलयम् । गत्वा । कर्मसंगिषु । जायते । तथा । प्रलीनः । तमसि । मूढयोनिषु । जायते ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहदेहाभिमानीजीव

रजोगुणकीवृद्धिहुए मृत्युकूं प्राप्तहोइके कर्मकेअधिकारीमनुष्योंविषे उत्पन्नहोवैहै तथा तमोगुणकीवृद्धिहुए मरणकूंप्राप्तहुआ यहजीव पश्वादिकयोनियोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहदेहाभिमानीजीव जबी रजोगुणकीवृद्धिहुए मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी कर्मसंगीयोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थात् श्रुतिस्मृतिकरिकैविधानकर्‍येजे अग्निहोत्रादिककर्महैं तथाश्रुतिस्मृति करिकैनिषिद्धकर्‍येजे हिंसादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंविषे तथातिनकर्मोंकेफलोंविषे अधिकारीजेमनुष्यहैं तिनोंकानाम कर्मसंगीहै ॥ ऐसेकर्मसंगीमनुष्योंविषे सोजीव जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार तमोगुणकीवृद्धिहुए यहजीव जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीव कार्यअकार्यकेविचारतैंरहित पश्वादिकमूढयोनियोंविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १५ ॥ ❋ ॥ अब सत्वादिकतीनगुणोंविषे आपणेअनुसारकर्मद्वारा विचित्रफलकीहेतुताकूं श्रीभगवान् संक्षेपकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कर्मणःसुकृतस्याहुःसात्त्विकंनिर्मलंफलम् ॥ रजसस्तुफलंदुःखमज्ञानंतमसःफलम् ॥ १६ ॥ कर्मणः । सुकृतस्य । आहुः । सात्त्विकम् । निर्मलम् । फलम् । रजसः । तु । फलम् । दुःखम् । अज्ञानम् । तमसः । फलम् ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन महत्ऋषिजन सात्विक धर्मका सात्विक निर्मल फल कथनकरेहैं पुनः राजसधर्मका दुःखरूप फल कहेहैं तथा तामसधर्मका अज्ञानरूप फल कहेहैं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन महत्ऋषिजन उत्तमसात्विकधर्मका सात्विक तथानिर्मल फल कहेहैं ॥ अर्थात् सत्वगुणकरिकैप्राप्तहुआ तथारजतमरूपमलकरिकैनहींमिल्याहुआ ऐसाजोसुखरूपफलहै सोसुखरूपफल तासात्विकधर्मका कहेहैं ॥ और पापमिश्रितपुण्यरूप जोराजसधर्महै ॥ तिसराजसधर्मकातौं तेमहत्ऋषि राजसदुःखरूपफल कहेहैं ॥ अर्थात् रजोगुणतैंउत्पन्नहुआ जो बहुतदुःखकरिकैमिश्रित अल्पसुखहै सो तिसराजसधर्मकाफल कह्याजावैहै ॥ काहेतैं जोजोकार्यहोवैहै सोसोकार्य आपणेकारणकेसदृशहींहोवैहै ॥ यातै पापमिश्रितपुण्यरूपराजसकर्मका बहुतदुःखकरिकैमिश्रित अल्पसुखरूपफल युक्तहींहै ॥ और तेमहत्ऋषिजन तामसधर्मकातौं अज्ञानरूपफलहीं कहेहैं ॥ अर्थात् तमोगुणकरिकैजन्यहोणेतैं तामसरूप ऐसाजो अविवेकप्रयुक्तदुःखहै सोदुःख तिसतामसधर्मकाहींफलकह्याजावैहै ॥ तहां सात्विकादिककर्मोंकालक्षणतौं (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै अष्टादशेअध्यायविषे श्रीभगवान् आपहींकथनकरैंगा ॥ ईहां इसश्लोकविषे श्रीभगवानूनैं रज

तम इनदोनोंशब्दोंका जो रजोगुणकेकार्यरूपकर्मविषे तथातमोगुणकेकार्यरूपकर्मविषे प्रयोगकऱ्याहै ॥ सो कार्य कारण दोनोंकेअभेदकूंअंगीकारकरिकै कऱ्याहै इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ अब श्रीभगवान् इसप्रकारकेफलकीविचित्रताविषे पूर्वउक्तहेतुकूंहीं कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) सत्त्वात्संजायतेज्ञानंरजसोलोभएवच ॥ प्रमादमोहौतमसोभवतोऽज्ञानमेवच ॥ १७ ॥ सत्वात् । संजायते । ज्ञानम् । रजसः । लोभः । एव । च । प्रमादमोहौ । तमसः । भवतः । अज्ञानम् । एव । च ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सत्त्वगुणतैं ज्ञान उत्पन्नहोवैहै तथा रजोगुणतैं लोभ हीं उत्पन्नहोवैहै तथा तमोगुणतैं प्रमादमोहदोनों उत्पन्नहोवैहैं तथाअज्ञान भी होवैहैं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियहैंद्वाराजिसके ऐसाजो शब्दादिविषयकज्ञानहै ॥ सोप्रकाशरूपज्ञानतौं केवल सत्वगुणतैहीं उत्पन्नहोवै ॥ इसकारणतैं तिस प्रकाशरूपज्ञानकेअनुसारी सात्विककर्मका प्रकाशकीबाहुल्यतावाला सुखरूपफलहींहोवैहैं ॥ और कोटीविषयोंकीप्राप्तिकरिकैंभी निवृत्तकरणेकूंअशक्य जा अभिलाषाविशेषहै ताकानामलोभहै ॥ ऐसालोभ रजोगुणतैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां निरंतरवृद्धिकूंप्राप्तहुआ तथापूरणकरणेकूंअशक्य ऐसे लोभकूं दुःखकाहेतुपणा प्रसिद्धहींहै ॥ यातैं तिसलोभपूर्वककऱ्याजो राजसकर्महै तिसराजसकर्मकाभी दुःखहींफल होवैहै ॥ और तमोगुणतैं प्रमाद मोह यहदोनों उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा अज्ञानभी उत्पन्नहोवैहै ॥ ईहां अज्ञानशब्दकरिकै अप्रकाशका ग्रहणकरणा ॥ और प्रमादमोह इनदोनोंशब्दोंकाअर्थतौं (अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च) इसपूर्वउक्त श्लोक विषे कथनकरिआयेहैं इति ॥ १७ ॥ अब सत्वादिकतीनगुणोंकेवृत्तविषेस्थितपुरुषोंका (यदासत्वेप्रवृद्धेतु) इसपूर्वउक्तश्लोकविषेकथनकऱ्याजोफलहै तिसीहीं फलकूं ऊर्ध्वभावकरिकै तथा अधोभावकरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू॰ श्लो॰) ऊर्ध्वंगच्छंतिसत्त्वस्थामध्येतिष्ठंतिराजसाः ॥ जघन्यगुणवृत्तस्थाअधोगच्छंतितामसाः ॥ १८ ॥ ऊर्ध्वं । गच्छंति । सत्वस्थाः । मध्ये । तिष्ठंति । राजसाः । जघन्यगुणवृत्तस्थाः । अधः । गच्छंति । तामसाः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सत्ववृत्तविषेस्थितपुरुष ऊपरिलेलोकोंकूं जावैहैं और रजोवृत्तविषेस्थितपुरुष मनुष्यलोकविषे स्थितहोवैहैं और निकृष्टतमोगुण केवृत्तविषेस्थित तामसपुरुष अधः गमनकरेहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां तीसरेतमोगुणकेअंतविषे वृत्त यहशब्द श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ याते सत्वरज इनआदिके दोगुणोंकेअंतविषेभी सोवृत्तशब्द श्रीभगवान्कं

विवक्षितहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सत्वगुणका जो शास्त्रजन्य ज्ञानरूप तथाशुभकर्मरूप वृत्तहै ॥ तिससत्वगुणकेवृत्तविषेस्थितहुए अर्थात् श्रद्धापूर्वक तिसवृत्तकूंधारणकरतेहुए यहपुरुष ब्रह्मलोकपर्यंत ऊपरिलेदेवलोकोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तिसज्ञानकर्मकीन्यूनअधिकताकरिके तेपुरुष न्यूनअधिकतावालेतिनदेवतावोंविषेहीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ मनुष्यशरीरकूं तथापश्वादिशरीरकूं तेसात्विकपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ और जेपुरुष रजोगुणके लोभादिपूर्वकराजस कर्मरूपवृत्तविषे स्थितहैं अर्थात् जेपुरुष तिसराजसकर्मरूपवृत्तकूं अत्यंतप्रीतिपूर्वककरेहैं ॥ तेराजसपुरुषतौं पुण्यपापमिश्रित इसमनुष्यलोकविषेहीं स्थितहोवैहैं ॥ तेराजसपुरुष देवशरीरकूं तथापशुआदिकशरीरकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु इनमनुष्योंविषेहीं तेराजसपुरुष उत्पन्नहोवैहैं ॥ और सत्त्व रज इनदोनोंगुणोंकीअपेक्षाकरिकै पश्चात् भावीहोणेतैं तिनदोनोंतैं निकृष्ट ऐसाजो तमोगुणहै ॥ तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिरूपवृत्तविषे प्रीतिवाले जेतामसपुरुषहै ॥ तेतामसपुरुषतौं अधोगमनकरेहैं ॥ अर्थात् पशुआदिकयोनियोंविषेंहीं उत्पन्नहोवैंहै ॥ तेतामसपुरुष मनुष्यशरीरकूं तथादेवताशरीरकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ तहां सात्त्विकपुरुष तथाराजसपुरुषभी कदाचित् तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिकवृत्तविषे स्थितहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंकूंभी पश्वादिकशरीरोंकीप्राप्तिहोणीचाहियै ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते श्रीभगवान् तिनतमोगुणकेवृत्तविषे स्थितपुरुषोंका विशेषण कथनकरेहै (तामसाः इति) तहां जिनपुरुषोंविषे सर्वकालमें तमोगुणहीं प्रधानहै ॥ तिनपुरुषोंका नाम तामसहै ॥ ऐसेतामसपुरुषहीं पशुआदिकयोनियोंविषे जन्मेहैं ॥ और सात्त्विकपुरुष तथाराजसपुरुष कदाचित् तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिकवृत्तविषे स्थितभीहोवैहैं ॥ तौंभी तिनोंविषे सोतमोगुण प्रधानहोवैनहीं ॥ किंतु अत्यंतगौणहोवैहै ॥ यातैं तेसात्विकपुरुष तथाराजसपुरुष पशुआदिकयोनियोंविषे उत्पन्न होवैंनहीं इहां किसीमूलपुस्तकविषे (जघन्यगुणवृत्तिस्थाः) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहीं जानणा इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां इसचतुर्दशेअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं तीनअर्थोंकेकथनकरणेकी प्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां एकतौं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगकूं ईश्वरकेआधीनपणा ॥ १ ॥ और दूसरा तेगुण कौंनहैं तथा तेगुण किसप्रकार इसजीवात्माकूंबंधायमानकरेहैं ॥ २ ॥ और तीसरा तिनगुणोंतैं इसपुरुषका किसप्रकारकरिकै मोक्षहोवैहै ॥ तथा तिसगुणातीतमुक्तपुरुषका कौंनलक्षणहै ॥ ३ ॥ इनतीनोंअर्थोंविषे आदिकेदोअर्थतौं पूर्वविस्तारतैंकथनकऱ्ये ॥ अब तीसरेअर्थकाकथनकरणा परिशेषतैं रह्या ॥ ताकेविषेभी सत्व रज तम इनतीनगुणोंकूं मिथ्याज्ञानरूपहोणेतैं इसपुरुषका सम्यक्ज्ञानतैं तिनगुणोंतैं मोक्षहोवैहै इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै॥

(मू०श्लो०) नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारंयदाद्रष्टानुपश्यति॥ गुणेभ्यश्चपरंवेत्तिमद्भावंसोधिगच्छति॥१९॥ न । अन्यं । गुणेभ्यः । कर्त्तारम् । यदा । द्रष्टा । अनुपश्यति । गुणेभ्यः । च । परम् । वेत्ति । मद्भावम् । सः । अधिगच्छति ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

जिसकालविषे यहद्रष्टापुरुष सत्त्वादिकगुणोंतै अन्य कर्त्ताकूं नहीं देखताहै तथा तिनगुणोंतैं आत्माकूं पर जानताहै तिसकालवि
षे सोद्रष्टापुरुष ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कार्यकारण विषय इनतीनआकारोंकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे सत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ तिनगुणोंतैं अन्यकिसीकर्त्ताकूं जिसकालविषे यह द्रष्टापुरुष विचारविषेकुशलहुआ नहींदेखैहै ॥ अर्थात् विचारतैंपूर्व तिनगुणोंतैंअन्य आत्माकूं कर्त्तारूपदेखताहुआभी जोपुरुष विचारतैंपश्चात् तिनसत्त्वादिकगुणों तैंअन्यकर्त्ताकूंनहींदेखैहै ॥ किंतु तेसत्त्वादिकगुणहीं अंतःकरण बहिःकरण शरीर विषय इत्यादिकभावकूंप्राप्तहुए सर्वलौकिकवैदिककर्मोंकेकर्त्ताहोवैहैं ॥ इसप्रकार जोपुरुष तिनसत्त्वादिकगुणोंकूंहींकर्त्तादेखैहै ॥ तथा तिसतिसअवस्थाविशेषरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे तेसत्वादिकगुणहैं ॥ तिनगुणौंतैं जोपुरुष आत्माकूं परजानैहै ॥ अर्थात् जैसे आकाशविषे स्थितसूर्य भूमिविषेस्थितजलकेसाथि तथाताजलकेकंपादिकविकारोंकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं ॥ तैसे जो आत्मादेव सत्त्वादिकतीनगुणोंकेसाथि तथातिनगुणोंकेकार्योंकेसाथि संबंधवालाहैनहीं ॥ तथा तिनकार्यसहितगुणोंका प्रकाशकहै ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहित है ॥ तथा सर्वप्रपंचकासाक्षीहै तथा सर्वत्रसमहै ॥ ऐसे एकअद्वितीयरूपक्षेत्रज्ञआत्माकूं जोद्रष्टापुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानैहै तिसकालविषे सोद्रष्टापुरुष मेंपरमेश्वरकेभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष मैंहींब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैंअभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं ब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपजानताहुआ यहपुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार सत्त्वादिकतीनगुणोंकूंहीं कर्त्तापणा देखणेहारा तथातिनगुणोंतैं आत्माकूं परदेखणेहारा पुरुष तिसनिर्गुणब्रह्मभावकूं किसप्रकारकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसप्रकारकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) गुणानेतानतीत्यत्रीन्देहीदेहसमुद्भवान् ॥ जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ २० ॥ गुणान् । एतान् । अतीत्य । त्रीन् । देही । देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादुःखैः । विमुक्तः । अमृतम् । अश्नुते ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन देहकेउत्पत्तिकाबीजरूप इन सत्त्वादिकतीन गुणोंकूं परित्यागकरिकै जन्ममृत्युजरादुःखइनोंकरिकै विमुक्तहुआ यहवि द्वान्पुरुष मोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देहकीउत्पत्तिकेबीजरूप ऐसेजे मायारूप सत्व रज तम यहतीनगुणहैं ॥ इनतीनगुणोंकूंअतिक्रमणकरिकै अर्थात् जीवतकालविषेहीं तत्व

ज्ञानकरिकै तिनगुणोंकाबाधकरिकै जन्मकरिकै तथामृत्युकरिकै तथा जराकरिकै तथाआध्यात्मिकादिकदुःखोंकरिकै विमुक्तहुआ अर्थात् जीवत्कालविषेहीं तिनमायामय जन्ममृत्युआदिकोंकेसंबंधतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष अमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूं प्राप्त होवैहै इति ॥ २० ❀ ॥ तहां इनसत्वादिकतीनगुणोंकाअतिक्रमणकरिकै यहविद्वान्पुरुष जीवत्कालविषेहीं मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसपूर्वउक्तअर्थ कूंश्रवणकरिकै अर्जुन तिसगुणातीतपुरुषकेलक्षजानणेकी तथा आचारजानणेकी तथागुणातीतपणेकेउपायजानणेकीइच्छाकरताहुआ श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतोभवतिप्रभो ॥ किमाचारःकथंचैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥ कैः । लिंगैः । त्रीन् । गुणान् । एतान् । अतीतः । भवति । प्रभो । किमाचारः । कथम् । च । एतान् । त्रीन् । गुणान् । अतिवर्त्तते ॥ ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेप्रभो ईन सत्त्वादिकतीन गुणोंकूं अतिक्रमणकरणेहारापुरुष किन लिंगोंकरिकैविशिष्ट होवैहै तथा किसंआचारवालाहोवैहै तथा ईन तीन गुणोंकूं किसंप्रकारकरिकै अतिक्रमणकरैहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेप्रभो सत्व रज तम इनतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरणेहारा जोतत्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोगुणातीत तत्ववेत्तापुरुष किनलिंगोंकरिकै विशिष्टहोवैहै ॥ अर्थात् जिनलक्षणरूपलिंगोंकरिकै सोतत्ववेत्तापुरुष जान्याजावैहै तेलक्षणरूपलिंग आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ इतिप्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ तथा तिसगुणातीत तत्ववेत्तापुरुष कौंनआचारहोवैहै ॥ अर्थात् सोतत्ववेत्तापुरुष यथेष्टचेष्टावालाहोवैहै ॥ अथवा नियमपूर्वकचेष्टावालाहोवैहै ॥ सोतत्ववेत्तापुरुषकाआचारभी आपहमारेप्रति कथनकरो ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ तथा सोतत्ववेत्तापुरुष किसप्रकारकरिकै इनतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरैहै ॥ अर्थात् तिसगुणातीतपणेका उपायकौंनहै ॥ सोउपायभी आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ ईहां (हेप्रभो) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ दुःखादिकोंकोनिवृत्तकरणेविषे जोसमर्थ होवै ताकानाम प्रभुहै ॥ जैसे राजादिकसमर्थपुरुष आपणेभृत्योंकेदुःखकूं निवृत्तकरैहै ॥ तैसे समर्थहोणे तैं आपभगवान्नैंहीं मैंभृत्यकादुःख निवृत्तकरणेयोग्यहै ॥ इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां यद्यपि इसगीताशास्त्रकेद्वितीयअध्यायविषे (स्थितप्रज्ञस्यकाभाषा) इत्यादिकवचनोंकरिकै यहसर्वअर्थ पूर्वहीं अर्जुननैं पूछाथा ॥ तथा (प्रजहाति यदाकामान्) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंभगवान्नैं तिसकाउत्तरभागपूर्वहीं कथन कऱ्याथा ॥ तथापि यहअर्जुन तिस पूर्वउक्तअर्थकूं पुनः प्रकारांतरकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहुआ अबी पूछैहै ॥ इसप्रकारके ताअर्जुनकेअभिप्रायकूं निश्च

यकरिकै श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तप्रकारतैंविलक्षणप्रकारकरिकै तिसतत्ववेत्तापुरुषकेलक्षणादिकोंकूं पांचश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥ तहां सोगुणातीतपुरुष किन लक्षणरूपलिंगोंकरिकैविशिष्टहोवैहै ॥ इसप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं एकश्लोककरिकै कथनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ प्रकाशंचप्रवृत्तिंचमोहमेवचपांडव ॥ नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानिननिवृत्तानिकांक्षति ॥ २२ ॥ प्रकाशम् । च । प्रवृत्तिम् । च । मोहम् । एव । च । पांडव । न । द्वेष्टि । संप्रवृत्तानि । न । निवृत्तानि । कांक्षति ॥२२॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन प्रवृत्तहुए प्रकाशकूं तथा प्रवृत्तिकूं तथा मोहकूं जोपुरुष कदाचित्भी नहीं द्वेषकरेहै तथा निवृत्तहुएतिनोंकूं नहीं इच्छा करेहै सोपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्वगुणकाकार्यरूप जोप्रकाशहै ॥ तथा रजोगुणकाकार्यरूप जा प्रवृत्तिहै ॥ तथा तमोगुणकाकार्यरूपजो मोहहै ॥ ईहां प्रकाश प्रवृत्ति मोह यहतीनोंकार्य सत्वादिकतीनगुणोंके दूसरेभीसर्वकार्योंकेउपलक्षणहैं ॥ तेसत्वादिकतीनगुणोंके प्रकाशादिकसर्वकार्य आपणीआपणीकारणसामग्रीकेवशतैं उत्पन्नहुए यद्यपि दुःखरूपहींहोवैहैं ॥ तथापि जोविद्वान्पुरुष दुःखबुद्धिकरिकै तिनकार्योंविषे द्वेषकूंनहींकरेहै ॥ अर्थात् यहदुःखरूपगुणोंकेकार्य काहेकूंउत्पन्नहुए हैं याप्रकारतैं जोविद्वान्पुरुष तिनोंविषें द्वेषकूंकरतानहीं ॥ और तेसत्वादिकगुणोंकेप्रकाशादिककार्य आपणेआपणेविनाशकीसामग्रीकेवशतैं निवृत्तहुए यद्यपि सुखरूपहींहोवैहैं ॥ तथापि जो विद्वान्पुरुष सुखबुद्धिकरिकै तिनोंकीइच्छानहींकरेहै ॥ अर्थात् सुखरूप यहगुणोंकेकार्योंकीनिवृत्ति हमारेकूं सर्वदा प्राप्तहोवै याप्रकारकी जोपुरुष इच्छाकरतानहीं ॥ काहेतैं सोविद्वान्पुरुष तिससत्वादिकगुणोंकूं तथातिनसत्वादिकगुणोंकेकार्योंकूं स्वप्नकीन्यांई मिथ्यारूपहीं जानेहैं ॥ और मिथ्यारूपकरिकैजान्याहुआपदार्थ इसपुरुषके रागका वाद्वेषका विषयहोवैनहीं ॥ जैसे मिथ्यारूपकरिकै जान्याहुआ शुक्तिरजत इसपुरुषके रागकाविषयनहीं होवैहै ॥ और मिथ्यारूपकरिकैजान्याहुआ रज्जुसर्प इसपुरुषके द्वेषकाविषय नहींहोवैहै ॥ इसप्रकार सत्वादिकतीनगुणोंके प्रकाशादिककार्योंकीप्रवृत्तिविषे जोपुरुष द्वेषतैंरहितहै॥ तथा तिनकार्योंकीनिवृत्तिविषे जोपुरुष रागतैंरहितहै॥ सोविद्वान्पुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार इसश्लोकका चतुर्थश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा ॥ तहां श्रीभगवान्नैं यहजोगुणातीतपुरुषकालक्षण कथनकऱ्याहै ॥ सोयहलक्षण तिसगुणातीतपुरुषकूंहींप्रत्यक्षहै ॥ दूसरेकिसीकूं प्रत्यक्षहैनहीं ॥ काहेतैं एकपुरुषकेअंतःकरणविषेरह्याजो द्वेषहै तथाताद्वेषकाअभावहै तथारागहै तथातारागकाअभावहै ॥ तिनद्वेषादिकोंकूं दूसरापुरुष जानिसकतानहीं ॥ यातैं यहगुणातीतपुरुषकालक्षण स्वार्थलक्षणहींहै ॥ परार्थलक्षण हैनहीं ॥ तहां जोलक्षण केवल आपणेकूंहीं ज्ञात

होवैहै सोलक्षण स्वार्थलक्षण कह्याजावैहै ॥ और जोलक्षणदूसरेकूंभी ज्ञातहोवैहै सोलक्षण परार्थलक्षण कह्याजावैहै ॥ इसीस्वार्थलक्षणकूं शास्त्रविषे स्वसंवेद्य कहेहैं ॥ और इसी परार्थलक्षणकूं शास्त्रविषे परसंवेद्य कहेहैं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ अब सोगुणातीतपुरुष किस आचारवालाहोवै इसद्वितीयप्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् तीनश्लोकोंकरिकैवर्णनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) उदासीनवदासीनोगुणैर्योनविचाल्यते ॥ गुणावर्त्ततइत्येवयोवतिष्ठतिनेंगते ॥ २३ ॥ उदासीनवत् । आसीनः । गुणैः । यः । न । विचाल्यते । गुणाः । वर्त्तंते । इति । एवं । यः । अवतिष्ठति । न । इंगते ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जोपुरुष उदासीनपुरुषकीन्यांई स्थितहै तथासत्त्वादिकगुणोंनैं नहीं चलायमानकरीता तथा तेगुण हीं परस्पर वर्त्ततेहैं ईसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोपुरुष स्थितहोवैहै तथा नहीं किंचित्मात्रभी व्यापारकरैहै सोपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै॥२३॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परस्पर विवादकरणेहारे जेदोपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे किसीकेभीपक्षकूं जोपुरुष अंगीकारकरतानहीं तापुरुषकानाम उदासीनहै ॥ सोउदासीनपुरुष जैसे किसीपुरुषविषे रागकूंभी करतानहीं ॥ तथा किसीपुरुषविषे द्वेषकूंभी करतानहीं ॥ किंतु सोउदासीनपुरुष रागद्वेषतैंरहितहुआस्थित होवैहै ॥ तिसउदासीनपुरुषकीन्यांई जोपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोइकै आपणेसत्आनंदस्वरूपविषेहीं स्थितहोवैहै ॥ तथा सुखदुःखादिरूपआकारकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहुए जेसत्वादिकतीनगुणहैं ॥ ऐसेतीनगुणोंनैंभी जोपुरुष आपणेस्वरूपकीस्थितितैंचलायमानकरीतानहीं ॥ किंतु देह इंद्रिय विषय इत्यादिरूपआकारकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए तेसत्त्वादिकगुणहीं आपसमैं साधकबाधक भावकरिकै तथाग्राह्यग्राहकभावकरिकै तथाउपकार्यउपकारकभावकरिकै वर्त्ततेहैं ॥ इनसर्वगुणों काप्रकाशकजो मैंआत्माहूं ॥ तिसमैंआत्माका किसीभीप्रकाश्यवस्तुकेधर्मसाथि संबंधहैनहीं ॥ जैसे घटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाश करणेहारेसूर्यका किसीभी प्रकाश्यरूपघटादिकपदार्थोंकेधर्मोंसाथि संबंधहैनहीं ॥ और यहसर्वप्रपंच दृश्यरूपहै तथाजडरूपहै तथास्वप्नकीन्यांई मिथ्याहींहै ॥ और मैंआत्मातौं द्रष्टाहूं तथास्वयंज्योतिस्वरूपहूं तथापरमार्थसत्यहूं तथासर्वविकारोंतैंरहितहूं तथाद्वैतभावतैंरहितहूं ॥ इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोपुरुष आपणेस्वरूपविषेहींस्थित होवैहै ॥ किसीभीकार्यकीसिद्धिवासतै व्यापारवालाहोतानहीं ॥ ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार इसश्लोकका तीसरेश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा ॥ ईहां (योवतिष्ठति) इसवचनकेस्थानविषे (योनुतिष्ठति) इसप्रकारकाभी किसीपुस्तकविषेपाठहोवैहै सोइसप्रकारकेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) समदुःखसुखःस्वस्थःसमलोष्टाश्मकांचनः ॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥ समदुःखसुखः । स्वस्थः । समलोष्टाश्मकांचनः । तुल्यप्रियाप्रियः । धीरः । तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन समहैदुःखसुखदोनोंजिसकूं तथास्वरूपविषेहैंस्थितिजिसकी तथासमहैंलोष्टअश्मकांचनजिसकूं तथातुल्यहै प्रियअप्रियदोनोंजिसकूं तथातुल्यहै आपणीनिंदास्तुतिदोनों जिसकूं ऐसाधीरपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिसतत्ववेत्तापुरुषका दुःखविषेतैं द्वेषनहींहै ॥ तथा सुखविषे रागनहींहै ॥ और तेदुःखसुखदोनोंहीं अनात्मारूपअंतकरणकेहींधर्महै ॥ तथा स्वप्नकीन्यांई मिथ्यारूपहैं ॥ यातैं रागद्वेषतैंरहितपणेकरिकै तथाअनात्मधर्मपणेकरिकै तथामिथ्यापणेकरिकै समहैं तेदुःखसुखदोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम समदुःखसुखहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसतत्ववेत्तापुरुषकूं तेदुःखसुखदोनों किसहेतुतैं समहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताके विषेहेतुकहेहैं (स्वस्थःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्ववेत्तापुरुष स्वस्थहै ॥ अर्थात् द्वैतदर्शनतैंरहितहोणेतैं जो तत्ववेत्तापुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माविषेहीं स्थितहैं ॥ इसकारणतैंहीं तिसतत्ववेत्तापुरुषकूं तेदुःखसुखदोनोंसमहैं ॥ आत्मा विषेस्थितितैंरहित बहिर्मुखपुरुषकूंहीं तिनदुःखसुखदोनोंविषे विषमताहोवैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैंसोतत्त्ववेत्तापुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषेहींस्थितहै ॥ तिसकारणतैंहींसोतत्ववेत्तापुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ तहां समहैं क्या ग्रहणत्यागभावतैं रहितहैं लोष्ट अश्मकांचन यहतीनों जिसकूं ताकानाम समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ तहां मृत्तिकाकेपिंडकानाम लोष्टहै ॥ औरपाषाणकानाम अश्महै ॥ औरसुवर्णकानाम कांचनहै ॥ अर्थात् जोतत्त्ववेत्तापुरुष लोष्टादिकतुच्छवस्तुवोंविषेतैं त्यागबुद्धितैंरहितहैं ॥ तथा सुवर्णादिकमहान्पदार्थोंविषे ग्रहणबुद्धितैंरहितहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्ववेत्तापुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ इसकारणतैंहीं सोतत्ववेत्तापुरुष तुल्यप्रियाप्रियहै ॥ तहां तुल्यहैं सुखकासाधनरूपप्रिय तथादुःखकासाधनरूपअप्रिय दोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम तुल्यप्रियाप्रियहै ॥ अर्थात् जिसतत्ववेत्तापुरुषकूं सोप्रियपदार्थतैं यहप्रियपदार्थ हमारेहितकासाधनहै यामकारकी हितसाधनताबुद्धिकाविषयनहींहै ॥ और सोअप्रियपदार्थतैं यहअप्रियपदार्थ हमारेअहितकासाधनहै याप्रकारकी अहितसाधनताबुद्धिका विषय नहींहै ॥ किंतु तेप्रियअप्रियदोनोंतिसतत्ववेत्तापुरुषकी उपेक्षाबुद्धिकेहींविषयहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष धीरहै ॥ अर्थात् बुद्धिमान्है अथवाधृतिमान्है ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष धीरहै ॥ इसकारणतैंहीं सोतत्ववेत्तापुरुष तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिहै ॥ तहां आपणेदोषोंकेकथनकानाम निंदाहै और आपणे गुणोंके कथनकानाम स्तुतिहै ॥ तुल्यहै आपणेनिंदा तथास्तुति दोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिहै ॥ ऐसातत्ववेत्तापुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इस प्रकारतैं इसश्लोकका द्वितीयश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनेकसाथि अन्वयकरणा इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्योमित्रारिपक्षयोः ॥ सर्वारंभपरित्यागीगुणातीतःसउच्यते ॥ २५ ॥ मानापमानयोः । तुल्यः । तुल्यः । मित्रारिपक्षयोः । सर्वारंभपरित्यागी । गुणातीतः । सः । उच्यते ॥ २५ ॥ (इतिपद०) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष मानअपमानदोनोंविषे तुल्यहै तथामित्रपक्षशत्रुपक्षदोनोंविषे तुल्यहै तथासर्व आरंभपरित्यागकऱ्येहैंजिसनैं सोपुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोतत्ववेत्तापुरुष मान अपमान दोनोंविषे तुल्यहै ॥ तहां सत्कारकानाम मानहै ॥ जिससत्कारकूं लोकविषे आदर कहेहैं ॥ और तिरस्कारकानाम अपमानहै ॥ जिसतिरस्कारकूं लोकविषे अनादर कहेहैं ॥ तिस मानअपमानदोनोंविषे जोपुरुष तुल्यहै ॥ अर्थात् मानकीप्राप्तिविषे जिसपुरुषकूं हर्षनहींहोवैहै ॥ तथा अपमानकीप्राप्तिविषे जिसपुरुषकूं विषादनहींहोवैहै ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः) इसवचनकरिकैकथनकरीजा निंदास्तुतिहै ॥ तथा इसश्लोकविषेकथनकऱ्याजो मानअपमानहै ॥ तिनदोनोंविषे इतनाभेदहै ॥ निंदास्तुति यहदोनोंतौंशब्दरूपहींहोवैहैं ॥ काहेतें दोषोंकेकथनकानाम निंदाहै ॥ और गुणोंकेकथनकानाम स्तुतिहै ॥ सोकथन शब्दरूपहींहै ॥ और मानअपमानतौं शब्दतैंविनाभी शरीरमनकाव्यापारविशेषरूपहोवैहैं ॥ इतना तिनदोनोंविषेभेदहै इति ॥ और किसीमूलपुस्तकविषेतौं (मानापमानयोस्तुल्यः) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै इसप्रकारकेपाठविषे सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा ॥ तथा जोतत्ववेत्तापुरुष मित्रपक्ष शत्रुपक्ष दोनोंविषे तुल्यहै ॥ अर्थात् सोतत्ववेत्तापुरुष जैसे मित्रपक्षकेद्वेषका अविषयहोवैहै तैसे शत्रुपक्षकेभी द्वेषका अविषयहोवैहै ॥ अथवा जोतत्ववेत्तापुरुष मित्रपक्षविषेतौं अनुग्रहनहींकरेहै ॥ और शत्रुपक्षविषे निग्रहनहींकरेहै ॥ तथा जोतत्ववेत्तापुरुष सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ ईहां शरीरमनवाणीकरिकै जिनोंका आरंभकऱ्याजावैहै तिनोंकानाम आरंभहै ॥ ऐसेलौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिन कर्मरूपसर्वआरंभोंका परित्यागकऱ्याहैजिसनैं ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ अर्थात् इसदेहकीयात्रामात्रविषेउपयोगी जेभिक्षाअटनादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंतैंभिन्न दूसरेसर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै जिसनैं ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ इसप्रकार (उदासीनवदासीनः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्येहुए जेआचारहैं ॥ ऐसेआचारोंकरिकैयुक्त जोतत्ववेत्तापुरुषहीं गुणातीत कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह (उदासीनवदासीनः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकैं कथनकऱ्येजे उपेक्षकत्वादिकधर्महैं ॥ तेउपेक्षकत्वादिकधर्म आत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंपूर्वतौं प्रयत्नसाध्यहोवैहैं ॥ अर्थात् आत्मज्ञानकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषनैं तिसआत्मज्ञानकेसाधनरूप करिकै तेउपेक्षकत्वादिकसर्वधर्म अनुष्ठानकरणे ॥ और तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर तिस गुणातीतजीवन्मुक्तपुरुषकेतौं तेउपेक्षकत्वादिकसर्वधर्म विनाहीं

प्रयत्नतैंसिद्ध लक्षणरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ इति ॥२५॥ ❀ ॥ अब यहअधिकारीपुरुष किसउपायकरिकै तिनगुणोंकूं अतिक्रमणकरैहै ॥ इसतृतीयप्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू॰श्लोक) मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते ॥ २६ ॥ माम् । च । यः । अव्यभिचारेण । भक्तियोगेन । सेवते । सः । गुणान् । समतीत्य । एतान् । ब्रह्मभूयाय । कल्पते ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अनन्य भक्तियोगकरिकै चिंतनकरैहै सोमेराभक्त इनपूर्वउक्त सत्त्वादिकगुणोंकूं अतिक्रमणकरिकै ब्रह्महोणेवासतै समर्थहोवैहै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वभूतोंकाअंतर्यामी तथाआपणीमायाशक्तिकरिकैक्षेत्रज्ञभावकूंप्राप्तहुआ ऐसाजो मैं परमानंदघन भगवान्वासुदेवहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरकूंहीं जोअधिकारीपुरुष अव्यभिचारी भक्तियोगकरिकै सेवनकरैहै ॥ तहां विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जो तैलधाराकीन्यांई मैंपरमात्मादेवविषयक सजातीय वृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम अव्यभिचारीभक्तियोगहै ॥ जोभक्तियोग पूर्वद्वादशेअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ ऐसेपरमप्रेमरूपअनन्यभक्तियोगकरिकै जोपुरुष मैंनारायणकूं सर्वदा चिंतनकरैहै ॥ सोमैंपरमेश्वरकाअनन्यभक्त इनपूर्वउक्त सत्वादिकतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरिकै अर्थात् अद्वैतदर्शनकरिकै तिनसत्वादिकतीनगुणोंकूंबाधकरिकै निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षवासतै समर्थहोवैहै ॥ यातैं सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाचिंतनहीं तिसगुणातीतपणेका उपायहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां मैंपरमात्मादेवकेचिंतनकरणेहारापुरुष मोक्षकूंहींप्राप्तहोवैहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे श्रीभगवान् आपणीमहान्तारूपहेतुकूं कथनकरैहै ॥

(मू॰ श्लो॰) ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहमममृतस्याव्ययस्यच ॥ शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेगुणत्रयविभागयोगोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ ब्रह्मणः । हि । प्रतिष्ठा । अहम् । अमृतस्य । अव्ययस्य । च । शाश्वतस्य । च । धर्मस्य । सुखस्य । ऐकांतिकस्य । च ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिस कारणतैं अमृतरूप तथा अव्ययरूप तथा शाश्वतरूप तथाधर्मरूप तथा अव्यभिचारी सुखरूप ऐसेसोपाधिककारणब्रह्मका मैंनिरुपाधिकवासुदेव वास्तवस्वरूपहूं तिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीभाक्तितैं मोक्षकीप्राप्ति युक्तहींहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तत्त्वमसि इसवाक्यविषेस्थितजो तत्पदहै ॥ तिसतत्पदकावाच्यअर्थरूप तथासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूप ऐसाजो मायावि शिष्ट सोपाधिकब्रह्म ॥ ऐसेसोपाधिकब्रह्मका मैंनिर्विकल्पकवासुदेवहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् पारमार्थिकरूप तथानिर्विकल्पकरूप तथासत्चित्आनंदरूप ऐसाजो सर्वउपाधियोंतैंरहिततत्पदकालक्ष्यअर्थहै सोलक्ष्यअर्थरूप मैंहींहूं ॥ तहां (प्रतिष्ठत्यत्रेतिप्रतिष्ठा) इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै कल्पितरूपतैंरहित अकल्पितरूपहीं प्रतिष्ठाशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंनिरुपाधिकशुद्धब्रह्महीं तिससोपाधिकब्रह्मका वास्तवस्वरूपहूं ॥ तिसकारणतैं अधिकारीपुरुष मैंनिरुपा धिकशुद्धब्रह्मका निरंतर चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षवासतै समर्थहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् किसप्रकारकेब्रह्मकी आप प्रतिष्ठाहो ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसब्रह्मकेविशेषणोंकूं कथनकरेहै (अमृतस्यइति) हेअर्जुन जिसब्रह्म का मैंपरमेश्वर प्रतिष्ठारूपहूं ॥ सोब्रह्म कैसाहै अमृतहै ॥ अर्थात् विनाशतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ यहब्रह्महींअमृतरूपहै तथाअभयरूपहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्म अव्ययहै अर्थात् विपरिणामतैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहै सोब्रह्मशाश्वतहै ॥ अर्थात् अपक्षयतैंरहितहै ॥ ईहांविनाश विपरिणाम अपक्षय इनतीनविकारोंकानिषेध जन्म अस्ति वृद्धि इनतीनविकारोंकेनिषेधकाभी उपलक्षणहै ॥ अर्थात् सोब्रह्म षट्भावविकारोंतैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहैसोब्रह्म धर्मरूपहै ॥ अर्थात् ज्ञाननिष्ठारूप धर्मकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्म सुखरूपहै ॥ अर्थात् परमानंदरूपहै ॥ अब तिससुखविषे विषय इंद्रियकेसंयोगकरिकै जन्यत्वकूंनिवृत्तकरणेवासतै तासुखकाविशेषण कथनकरेहैं (ऐकांतिकस्यइति) कैसाहैसोसुख ऐकांतिकहै ॥ अर्थात् जोसुख विषयजन्य सुखकीन्यांई व्यभिचारीनहींहै ॥ किंतु सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे जोसुख विद्यमानहै ॥ इसीहीं व्यापकसुखकूं (योवैभूमातत्सुखम्) यहश्रुतिभी कथनकरेहै॥ ऐसेअमृतादिकसर्वविशेषणोंकरिकैविशिष्टब्रह्मका मैंपरमेश्वर जिसकारणतैं वास्तवस्वरूपहूं॥तिसकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकाअनन्यभक्त इससंसारबंधतैंमुक्तहोवैहैइति॥ तहां इसप्रकारका श्रीकृष्णभगवान्कास्वरूप ब्रह्मानैंभी श्रीकृष्णभगवान्केप्रतिकथनकऱ्याहै॥तहांश्लोक॥ (एकस्त्वमात्मापुरुषःपुराणःसत्यःस्वयंज्योतिरनंतआद्यः॥ नित्योऽक्षरोजस्रसुखोनिरंजनः पूर्णोऽद्वयोमुक्तउपाधितोऽमृतः) ॥ अर्थयह॥ हेश्रीकृष्णभगवन् आपकैसेहो एकहो ॥अर्थात् सर्वत्रएकरूपहो तथा सर्वप्राणीयोंका आत्मारूपहो ॥ तथा पुरुषहो ॥ अर्थात् सर्वशरीररूपपुरीयोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै स्थितहो ॥ तथा पुराणहो ॥ अर्थात् इसतैंपूर्वभी विद्यमानहो॥तथा सत्यहो अर्थात् तीनकालोंविषेबाधतैंरहितहो ॥ तथा स्वयंज्योतिहो ॥ अर्थात् आपणेप्रकाशवासतै इतरप्रकाशकीअपेक्षातैंरहितहो ॥ तथा अनंतहो अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहो ॥ तथा आद्यहो अर्थात् सर्वकाआदिकारणहो ॥ तथा नित्यहो अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैं रहितहो ॥ तथा अक्षरहो॥